पत्रकारिता : ‘मिशन’ से बहुराष्ट्रीय बाजार तक का सफर

कितना बदली है पत्रकारिता-अब पत्र पत्रिकाएँ उसी तरह से व्यावसायिक हो गई हैं जैसे रिष्ते-नाते। पत्रकारिता को मिषन समझना या बताना आज के जमाने में किसी यात्रा को हवाई जहाज से ज्यादा मुफीद बैलगाड़ी को तरजीह देना जैसा है। क्योंकि पत्र पत्रिकाएँ और टीवी चैनल किसी मिषन के मद्देनजर कार्य नहीं करते हैं। इनका मकसद केवल एक है-धन कमाना, प्रतिश्ठा हासिल करना, राजनीति, सिनेमा और मनोरंजन के क्षेत्र में अपना दखल बनाए रखना। जाहिर तौर पर मौजूदा दौर ऐन केन प्रकारेण धन कमाना और अपनी सामाजिक, राजनीतिक या व्यावसायिक हैषियत को बढ़ाना है। अब यह बताने की जरूरत नहीं है कि पत्रकारिता समाज, देष, संस्कृति, धर्म और भाशा की बेहतरी के लिए किस तरह की भूमिका निभाती है।

यदि हम पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डाले तो इसे दो काल खंडों में विभाजित कर देख सकते हैं-भारत की आजादी के पूर्व की पत्रकारिता और आजादी के बाद की पत्रकारिता। आजादी के पूर्व की पत्रकारिता कभी मिषन और देष-समाज की सेवा के लिए समर्पित थी, और आज की पत्रकारिता पूरी तरह बाजार और मनोरंजन को समर्पित है। बाजार तय करता है कि अखबार या टीवी चैनल में क्या छपेगा और क्या नहीं छपेगा। बाजार तय करता है कि टीवी चैनलों और अखबारों की भाशा कैसी हो। बाजार तय करता है कि संवाददाता, संपादक, विज्ञापन प्रबंधक को टीवी चैनलों और अखबारों में क्या सामग्री परोसना चाहिए जिससे उसकी नौकरी बची रहेगी।

आजादी के पूर्व की पत्रकारिता समाज और संस्कृति सहित ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिस पर इसका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव न पड़ा हो। वह दौर था, जब पत्रकारिता अंग्रेजी षासन के खिलाफ नहीं की जा सकती थी। इसके बावजूद देष, समाज और संस्कृति के हित में अंग्रेजी क्रूर षासन की क्रूरता, षोशण और अत्याचार के खिलाफ प्राण की बाजी लगाकर पत्र पत्रिकाएँ निकाली गईं।

समाचार और लेख लिखे जाते थे। ऐसे दौर की पत्रकारिता के युगपुरुशों और योद्धाओं में गणेष षंकर विद्यार्थी, बालमुकुंद गुप्त, मदन मोहन मालवीय, भारतेंदु हरिष्चंद, प्रताप नारायण मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुंषी प्रेम चंद जैसे सैकड़ों लेखनी के योद्धा इसके पैरोकार थे।

पत्रकारिता के इन योद्धाओं ने पत्रकारिता के जिस युग का निर्माण किया, जिस युग को जिया, वह युग हमें इतिहासबोध कितना करा पा रहा है इसे कहना मुष्किल है, लेकिन इतना तो कहा ही जा सका है आज पत्रकारिता न मिषन है, न देष-समाज सेवा है और न हीं हिंदी और अन्य भारतीय भाशाओं को सात्विक वैभव प्रदान करने का कार्य करती हैं।

पत्र के जरिए क्रान्ति करने की आज भले ही कल्पना न की जाए, लेकिन गुलाम भारत में यह एक हकीकत थी, जो इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

आजादी के पूर्व और आजादी के बाद-आजादी के पहले और बाद की पत्रकारिता में एक बड़ा फर्क आया है। आजादी के पहले की पत्रकारिता षुद्ध रूप से समाज, देष और साहित्य की सेवा के लिए मिषन के रूप में अपनाई जाती थी। आजादी के बाद खासकर आठवें दषक के बाद पत्रकारिता जिसमें कि संपादन कला भी सम्मिलित है मिषन से हटकर व्यवसाय हो गई। अब अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं के मालिक ही संपादक होने लगे। समाजसेवा और देष-सेवा पत्र निकालने का उद्देष्य समाप्त होते ही पत्र का रंग-ढंग ही नहीं बदला बल्कि उसकी चेतना, उसकी आत्मा और उसकी विष्वासनीयता में अंतर आने लगा।

पत्रकारिता की इस गिरावट को आज से कितने वर्श पूर्व ही पराड़कर जी ने अपनी सूक्ष्म-दृश्टि से समझ लिया था। इस संबंध में महान् पत्रकार बाबूराव विश्णु पराड़कर द्वारा सन् 1925 में दिये वृंदावन हिंदी साहित्य सम्मेलन का उनका अध्यक्षीय भाशण बहुत कुछ कह देता है। श्री पराड़कर ने कहा था, ‘‘पत्र निकालकर स्वतंत्रता पूर्वक चलाना बड़े-बड़े धनिकों और सुसंगठित कम्पनियों के लिए ही सम्भव होगा।

पत्र सर्वांग सुदर होंगे। आकार में बड़े होंगे, छपाई अच्छी होगी, मनोहर मनोरंजक और ज्ञानवर्धन चित्रों से सुसज्जित मनोहारिणी होंगे, लेखों में विविधता होगी, गंभीर गवेशणा की झलक होगी और मनोहारिणी षक्ति भी होगी, ग्राहकों की संख्या लाखों में गिनी जाएगी। यह सब होगा, पर पत्र प्राणहीन होंगे।’’

बदलाव के निहितार्थ-आज किसी भी पत्र-पत्रिका के लिए संपादक से अधिक कुषल प्रबंधक और रिगुलेटर होना उसकी योग्यता बन गई है। मालिक और संपादक के बीच का सहज आत्मीय संबंध अब तकरीबन खत्म हो गया है। ऐसे में संपादन करना कितना दुरूह है, आसानी से समझा जा सकता है। आज के बाजारवाद के युग में जहां देष में बहुराश्ट्रीयकरण, निजीकरण और उदारीकरण के नाम सब कुछ दाँव पर लगाया जा रहा है, संपादन करना बहुत बड़ी चुनौती का काम है।

पत्रकारिता मिशन न होते हुए भी आज हम इसके जरिए समाज की हालात, देष की समस्याओं, मुद्दों और विकृतियों तथा सुकृतियों पर गंभीरता से पैनी नजर रखते हुए पत्र को समाज का एक सषक्त प्रहरी के रूप में खड़ा कर सकते हैं।

संपादकीय टिप्पणियों, समाचारों के चयन में सावधनियाँ, लेखों के चयन और उनके संपादन में निश्पक्षता और टीम के सभी साथियों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य सौंपने की जिम्मेदारी को सावधानी पूर्वक करके पत्र को एक ऊँचाई दी जा सकती है। हर मालिक चाहता है कि उसका पत्र हर तरह से मौजूदा हालात का आइना हो। ऐसे में उसके भी अपने स्वार्थ और सुख होते हैं। इसे भी संपादक को ही निभाना होता है।

क्या बाजार ने पत्रकारिता का स्वरूप बदला?-पत्र-पत्रिकाओं में भले ही सब कुछ बाजार से तय हो रहा हो, लेकिन सत्य, निग्रह, निश्ठा, सेवाधर्म, प्रेम और अपने तथा पाठक के प्रति ईमानदार होना संपादक के लिए आज भी जरूरी है। इस संबंध में भारत में पत्रकारिता के जनक कहे जाने वाले जेम्स आगस्टस हिक्की जो ‘बंगाल गजट’ और कलकत्ता जनरल एडवाइजर के प्रकाषक एंव संपादक थे के पत्र लिखा यह वाक्य आज के संदर्भ में भी कितना प्रासंगिक है।

हिक्की लिखते हैं, ‘‘यद्यपि मुझमें समाचार पत्र प्रकाषित करने की योग्यता नहीं है किंतु मैं अपनी आत्मा की स्वतंत्रता के लिए अपनी षरीर को दास बनाना स्वीकार करता हूँ।’’संपादक को अपनी आत्मा को गिरवी रखकर मालिक का बधुआ मजदूर बनने से बचना चाहिए। इससे ही संपादन कला के प्रति न्याय किया जा सकता है और समाज को भी समाचार और विचार की आवष्यकता को सच्चाई के साथ परोसा जा सकता है।

समझौता एक हकीकत है-हर 30 मई को हमारी नजर अपने उन कार्यों पर जाती है जिसे हमने अपने सूझबूझ से बेहतर करने की कोषिष किया होता है। लेकिन पत्र के बाजार के साथ समझौते करते हुए आगे बढ़ाने में अपनी सारी सूझबूझ झोंकने के लिए समझौते करने के लिए विवष किया जाता है तब लगता है, जिस मकसद को लेकर कलम के सिपाही बनने की कसम खाई थी, वह तो दूर-दूर तक कहीं दिखाई ही नहीं पड़ता है। बस, सारा जोष पल में फुर्र हो जाता है।

अंदर का सच का बाहर के सच से रूबरू होते ही यह बात समझ में आ जाती है कि इस नए दौर में बाजार का बधुआ मजदूर बनना मंजूर नहीं तो इस क्षेत्र में बहुत समय तक टिके नहीं रहा जा सकता है।

जिसने बाजार का बधुआ मजदूर बनना और अखबार या चैनल के मालिक की टहल बजाना अपना धर्म स्वीकार कर लिया, वह ही पत्रकारिता का सिद्धि हासिल कर सकता है। आज बड़े से बड़े नामों के साथ केवल और केवल एक यही समझौता चल रहा है। इस समझौते की समझ जिसे है, उसमें पत्रकारिता का योद्धा बनने की काबिलियत हो सकती है।

साइबर की दुनिया के अलावा क्या है?-साइबर दुनिया के इस दौर में सारा संसार एक गाँव में सिमट गया है। कोई भी इस गाँव से बाहर रहकर सरवाइब नहीं कर सकता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में तो एकदम नहीं। जिस बहुराश्ट्रीय बाजार का हिस्सा आज की पत्रकारिता है उसे बाबू पराड़कर या गणेष षंकर विद्यार्थी के पत्रकारिता मिषन की परछाई भी नहीं पड़नी चाहिए।

मिषन और बाजार साथ-साथ कभी नहीं चल सकते। 30 मई हम नई दौर की पत्रकारिता का विष्लेशण, दूशण और भूशण पर अपनी पैनी नजर रखकर न कुछ हासिल कर सकते हैं और न तो किसी को पत्रकारिता के उद्देष्य को ही समझा सकते हैं। लेकिन इतना तो कर ही सकते हैं कि जिस कलम के साथ न्याय करने की कसम खाई थी उसे निभाने में कितना सफल हुआ हूँ।

तब याद आती हैं सवा सौ साल पहले ‘मतवाला’ में पत्रकारिता पर लिखीं ये पंक्तियां आज भी कितनी मौजूं हैं- ‘‘खींचो न कमान, न तलवार निकालो/ जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।’’ अब अखबार तोप मुकाबिल होने पर नहीं बल्कि बाजार मुकाबिल होने पर निकालना संभव हो रहा है।

▶ **अखिलेश आर्येन्दु द्वारा आर्यन क्लासेज महेश भार्गवजी दिल्ली-8178710334/ 9868235056**

साहित्य जगत...

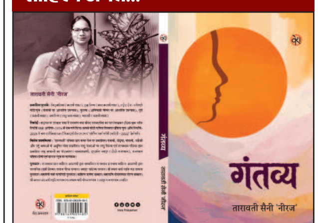

तारावती सैनी ‘नीरज’ कि नई कृति ‘गंतव्य’ पाठकों के समक्ष

हिंदी साहित्य की चर्चित लेखिका तारावती सैनी ’ नीरज ’ कि वेरा प्रकाशन से प्रकाशित नवीन काव्य कृति गंतव्य का आकर्षण आवरण पाठकों के सामने आया है । पुस्तक का शीर्षक गंतव्य अपने भीतर जीवन दर्शन समेटे हुए है ।

तारावती सैनी ‘नीरज ’ कि अभी तक कई चर्चित पुस्तकें कुनबा, हंड्रेड डेज द मिस्ट्री कंटीन्यूज, चिड़कलियां , बसंती रंग, हुकू जिन्न ,नूरी, महतारी आ चुकी हैं लेकिन ये काव्य कृति पहली है ।

लेखिका कहती हैं गंतव्य लिखने का तात्पर्य मेरे लिए कहीं किसी मंजिल पर पहुंचना नहीं है बल्कि मेरा मानना है जीवन में आगे बढ़ने के लिए कुछ चीजों से गंतव्य करना बहुत जरूरी होता है । चाहे वह भय , दुख, स्मृतियां, उलझने , प्रेम ,जीवन द्व मरण या कुछ भी हो ।

इस कविता-संग्रह में लेखिका ने जीवन में महसूस किए गए अनुभवों और संवेदनाओं को शब्दों में व्यक्त किया है। संग्रह की कविताएं जीवन के साधारण दृश्यों को भी असाधारण अर्थों में रूपांतरित करती दिखाई देती हैं। साथ ही इसमें संवेदनाएं, स्मृतियां, रिश्ते, लोकजीवन और मानवीय भावनाओं की गहरी छाप देखने को मिलती है।

लेखिका ने पाठकों से इस कृति पर अपनी प्रतिक्रियाएँ देने की अपेक्षा जताई है। उन्हें उम्मीद है कि ‘गंतव्य’ पाठकों की कसौटी पर खरा उतरेगा और साहित्य जगत में अपनी एक विशेष पहचान बनाएगा।

त्रिशिका धरा बनीं गौ माता की सुरक्षा की मिसाल

कानपुर की युवा कवयित्री त्रिशिका धरा इन दिनों अपनी अनोखी और प्रेरणादायक मुहिम को लेकर शहर भर में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। सड़कों पर असहाय घूमने वाली गौ माताओं को सड़क दुर्घटनाओं से बचाने के लिए उन्होंने Reflective Safety Belt अभियान शुरू किया है, जो अब धीरे-धीरे एक सामाजिक जागरूकता अभियान का रूप लेता जा रहा है।

त्रिशिका धरा स्वयं शहर की सड़कों पर जाकर गायों के गले में रिफ्लेक्टिव बेल्ट बांधती हैं, ताकि रात के अंधेरे में वाहन चालकों को गाय दूर से दिखाई दे सके और दुर्घटनाओं को रोका जा सके। उनकी यह पहल न केवल गौ सेवा का उदाहरण है, बल्कि समाज को संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का संदेश भी दे रही है।

त्रिशिका बताती हैं कि एक दिन सड़क पर घायल गाय को देखकर उनके मन में यह विचार आया था। उस दर्दनाक दृश्य ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। इसके बाद उन्होंने संकल्प लिया कि वे जितना संभव हो सके, गौ माताओं को सड़क दुर्घटनाओं से बचाने का प्रयास करेंगी।

धीरे-धीरे लोगों को उनकी इस मुहिम की जानकारी होने लगी और समाज के सहयोग से यह अभियान आगे बढ़ता गया। आज वे लगातार कई क्षेत्रों में जाकर गायों को सुरक्षा बेल्ट पहनाने का कार्य कर रही हैं। शहर के लोग भी इस प्रयास की सराहना कर रहे हैं और इसे मानवता की मिसाल बता रहे हैं।

त्रिशिका धरा का मानना है कि ‘गौ सेवा केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी है। यदि समाज मिलकर छोटे-छोटे प्रयास करे, तो कई बेजुबान जानवरों की जान बचाई जा सकती है। उनकी यह पहल युवाओं के लिए भी प्रेरणा बन रही है कि समाज में बदलाव लाने के लिए बड़े साधनों नहीं, बल्कि बड़े इरादों की जरूरत होती है।

सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास हो

भारत में बहुत अच्छे ग्रंथ हैं यह बहुत अच्छी चीज हैं । संस्कृत, पाली और अन्य कईं अन्य भाषाओं में अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं । इन ग्रंथों में संग्रहित अच्छी वाणीयां भी अपने आप में रत्न होती हैं । आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कहा कि व्यक्ति को अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए स्वाभिमान रखना आवश्यक है पर अभिमान अस्तित्व के लिए खतरा है पूज्य गुरुदेव कहते थे कि व्यक्ति अपने आपको ऊंचा और दूसरों को हीन मानकर आत्मोकर्ष करता है, यह उसका अभिमान है, आत्महनन है, जो हिंसा का ही एक रूप है उनके अभिव्यक्त विचार हर किसी की अहं चेतना पर चोट करने में सक्षम हैं।

मेरे चित्त पर कभी-कभी अभिमान की छाया आ जाती है मैं चौंककर उसे देखता हूं और सोचता हूं कि मैं अभिमान किस बात का करूं ज्ञान का संसार में अनेक व्यक्ति ऐसे हैं, जो अनेक क्षेत्रों में मेरे से अधिक ज्ञानी हैं कुछ विषय ऐसे भी हैं, जिनका मैं ककहरा भी नहीं जानता यदि मेरे पास केवलज्ञान होता तो संभवतः अभिमान का प्रसंग हो सकता था पर केवलज्ञानी अभिमानमुक्त होते हैं तो क्या तप का अभिमान करूं मैंने तो बेले-तेले ही किये हैं भगवान् महावीर तो छह-छह माह की तपस्या सहज ही कर लेते थे यह भी नहीं तो क्या बुद्धि का अभिमान करूं अभयकुमार जैसी बुद्धि हो तो भले ही अभिमान किया जा सके, पर अभयकुमार और स्थूलिभद्र की बहिनों जैसी बुद्धि कहां ? इसी प्रकार बाहुबलि जैसा बल होता तो बल पर अभिमान करने का प्रसंग हो सकता था दर्शन की दृष्टि से क्षायक सम्यक्त्व और चारित्र की दृष्टि से क्षायक चारित्र होता तो अभिमान का विषय बनता इसी प्रकार सनत्कुमार और मघवागणी जैसा मेरा रूप होता तो अभिमान का हेतु बनता अन्यथा रूप का भी क्या अभिमान करना ? ऐश्वर्य का भी कैसा अभिमान ? शालिभद्र जैसा ऐश्वर्य कहां ? मैं तो सोचता रहता हूं कि जिन लोगों के पास यह सब था, उन्हें भी अभिमान नहीं हुआ तो मेरे पास तो अभिमान करने लायक कुछ है ही नहीं, फिर अभिमान किस बात का करूं ? मेरी स्पष्ट मान्यता है कि मैं महान हूं , आकर्षक वक्ता हूं , प्रमुख लेखक हूं , कवि हूं आदि - आदि ये सब अभिमान के चिन्ह हैं साधक को इन सब अहंमान्यताओं से ऊपर उठना चाहिए पूज्य गुरुदेव की आत्मतेज युक्त यह अनुभवपूत वाणी अहंकार की जड़ों पर प्रहार कर विनम्रता की नयी पौध लगाने में सक्षम होगी ऐसा मेरा (आचार्यश्री महाप्रज्ञजी) विश्वास है संस्कृत में कहा गया हैं कि धरती पर तीन रत्न हैं- पानी, अनाज और सुभाषित अच्छी वाणी भी एक रत्न होती हैं । शास्त्रों की कल्याणी वाणी से हमें मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता हैं । भारत का यह सौभाग्य हैं कि यहां की धरती पर अनेक संत हुए हैं और आज भी हैं । ऐसे ज्ञानी संतो के उपदेश हमको सुनने को मिले वह मिल रहें हैं तो इससे समय भी सार्थक हो सकता हैं । वह जीवन को अच्छी दिशा भी मिल सकती हैं । यह कोई नहीं बता सकता कि उसकी आख़िरी सांस कौन सी होगी ? हर व्यक्ति यही सोचता है कि अभी मेरे जाने का समय आया नहीं।यह मिथ्या है। वर्तमान समय भौतिक्ता वाला है।इस चकाचौंध भरी दुनियां में दौलत के पीछे इंसान इस क़दर पागल हो गया कि वो धन प्राप्त करने के चक्कर में अपना सुख-चैन खो रहा है। उसके ना जीवन में शांति है,ना पर्याप्त नींद है,ना परिवार के लिये समय है और वह जिस शरीर से काम ले रहा है उसको स्वस्थ रखने के लिये भी समय नहीं है। जीवन में असली सुख की परिभाष देखनी है तो हम्हें देखना चाहिये हमारे पूर्वजों का जीवन। उनका जीवन सादा,सरल,सच्चा और संतोषी था।वह बड़ा परिवार होने के बावजूद वो अपना जीवन शांति से बिताते थे। इंसान अपनी ख्वाहिशें सीमित करदे तो जीवन में अपने आप शांति आ जायेगी। शास्त्र में कहा गया हैं कि- स्वयं सत्य खोजो । आदमी सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करे ।

अध्यात्म जगत में साधना द्वारा सच्चाई की शोध और सच्चाई की प्राप्ति हो सकती हैं । ज्ञान इन्द्रियों की सहायता से भी हो सकता हैं । दूसरा ज्ञान अतीन्द्रिय होता हैं, जो इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना प्राप्त होता हैं । पहली प्रकार का ज्ञान परोक्ष और दूसरी प्रकार का ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान होता हैं जो भीतर से प्रकट होता हैं । ज्ञान का हमारे जीवन में बहुत महत्व हैं । ज्ञान एक पवित्र तत्व हैं । वह ज्ञान के साथ हमारा आचरण भी अच्छा बनता हैं । आत्मा की चार अनंत शक्तियां - ज्ञान, दर्शन,आनंद और वीर्य हैं ।ज्ञानावरणीय क्षयोपशम से हमारी ज्ञान चेतना, दर्शनावरणीय क्षयोपशम से दर्शन चेतना का विकास होता हैं । मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से राग - द्वेष मुक्त चेतना विकास करती हैं । और अंतराय कर्म के क्षयोपशम से आनंद का विकास होता है। यही सब शक्तियों को संचालित करने वाली और महाशक्ति महा वीर्य का विकास है। अध्यात्म साधना द्वारा इस शक्ति का विकास संभव हैं । खाने का संयम ,तप का प्रयोग व सम्यक् दृष्टिकोण आदि बने यही प्रयास रहे । नवकार मन्त्र के जाप से पवित्र वातावरण का निर्माण होता हैं । उससे अध्यात्म सिर्फ समझने का ही नहीं ,जीने का अवकाश मिल पायेगा। वह इसके आगे कुछ और शेष नहीं होगा । अतः हमारा भाव विशुद्धता चित्त और मन की निर्मलता का निरंतर अभ्यास चले । यही हमारे लिए काम्य हैं ।

▶ **प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)**

आत्मा एक – मिनी स्वरूप अनेक

भगवन...! भगवन तो भगवन है, सर्व गुण संपन्न, सर्व शक्तिमान, अपनी मर्जी के मालिक। उन्हें शौक है भांति-भांति के खिलौने बनाने का!अपने गुरुर, अपने सुरूर में एक दिन अफीम, गांजा, चरस और भंग बराबर मात्रा में पीस कर चूर्ण तैयार किया। एक पुड़िया दारू संग आयुर्वेदिक तरीके से घोट कर सेवन किया और उसी सुरूर में एक महती आत्मा गढी। नया प्रयोग करने के उत्साह में एक आत्मा के स्थान पर कई मिनी आत्मायें भर दी और नया प्रोडेक्ट तैयार हुआ इंटरनेशनल फूफा चौधरी ट्रम्प।

अनेक आत्मायें आपस में टकराने से वो कनफ्यूज रहते हैं। परिणाम स्वरूप खिलौना बिना चाबी के चलने लगा जिससे स्वयं भगवन कनफ्यूज हो गये कि मैंने क्या बना दिया अब पल पल गिरगिट सा रंग बदलती अपने रूप बदलने लगी। कभी फूफा तो कभी चौधरी तो कभी बेताल का स्वरूप धरने लगी। मार्केट के हिसाब से सटोरियों सा बर्ताव करने लगती है। नित्य नई कहानियाँ सुनाती है और सब को सुनने को मजबूर करती है। कहानी सुनाने को बोलता बेताल मगर परेशान होता है विक्रम..!

जब चौधरी की मिनी आत्मा बाहर आती है तो जैसी मर्जी वैसे सैंक्शन टिका देती है, वो बात और उससे अमरीकी अर्थ व्यवस्था डाँवाडोल हो जाती है। अर्थ व्यवस्था बिगड़ती है तो बिगड़े, उसे तो परवाह अपनी व्यक्तिगत अर्थ व्यवस्था की। एक बयान ही काफी है, शेयर बाजार में उथलपुथल मचाने को। सुबह कालीन सत्र में बयान आया कि कुछ घंटो में ईरान से डील होने वाली है, तेल पाँच डॉलर नीचे और शेयर मार्केट अप। दोपहर के सत्र में फिर दूजा बयान आता है अफसर डील करने में जल्दीबाजी न करे तो उनकी व्यक्तिगत अर्थ व्यवस्था के सुधार का सतुना तैयार...! चौधरी की व्यक्तिगत अर्थ व्यवस्था का विकास होता रहता है, दुनिया जाये भाड़ में, सटोरिये की आत्मा प्रसन्न...!

कुछ और कर पाये कि फूफा वाली आत्मा सजग हो जाती है। पूरे युरोप सहित सब से रूठ जाती है आत्मा, नाना प्रकार के मसले फुफकारने लगते हैं। एनरिच युरेनियम देना होगा, नहीं दोगे तो युद्ध के लिए तैयार रहो, इस बार पाषाण युग में पहुँचा दिये जाओगे,नकली

भड़काहट दुनिया को भयभीत अवश्य कर देती है। न जाने चंद घंटो में आने वाला फैसला चन्द हफ्तों पर चल जाता है। ब्याह बिगड़े तो बिगड़े, फूफा को राजी करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हो जाता है। परंतु ना नौ मन तेल होता है, ना राधा नाचती है मगर खामखां दुनिया परेशान हो जाती है। फूफे की आत्मा तो अड़ी की अड़ी है...!

फूफा की आत्मा को दबा देती है पागल आत्मा। पगलाई आत्मा कब किस की सुनती है, जी करे तो हँसे,दिल में आये तो फूट-फूट रोये। आत्मा और वो भी पगलाई, सामने कौन टोके, वो बात और है कि मुँह फेर हंसते हैं। पल में तोला, पल में माशा की तर्ज़ पर सुबह, दोपहर शाम, अलग-अलग बयान आते हैं। आत्माओ को आन्तरिक द्वंद्व से हर आत्मा निजी स्तर पर कनफ्यूज हो जाती है और संग दुनिया को कनफ्यूजिया देती है आत्मा। इसी कनफ्यूजन का परिणाम है बयान आता है ‘द्व स्थ्1द्व स्थ्स्द्ध’ पर मोदी है कि मानता ही नहीं। पगलाई आत्मा की सुने कौन और माने कौन... वो बात और है कि पाकिस्तानी मुनीर व्हाइट हाउस में कलेवा करने पहुंच जाता है....!

आजकल कुछ पगलाई आत्मायें भारत में भी विचरण कर रही है। उन्होंने एक ‘कोकरोच जनता पार्टी बनाई है वो बात और है कि जिसके हैंडल पर 49? फोलोवर्स पाकिस्तानी है और 18 % अमेरिकी है, भारतीय तो मात्र 9% है। जो भी हो चर्चा में छायी है ये पगलाई पार्टी।

कहने को चौधरी साहब आतंक वाद के खिलाफ है, वे आतंकवादियों का समूल नाश चाहते हैं परंतु इनके जन्मदाता को सार्वजनिक स्तर पर सरंक्षण देते हैं। उनकी मदद करते हैं और दूसरों को प्रेरित कर म सहायता करवाते हैं। ऐसी छद्म आत्मा कैसे विश्वसनीय हो सकती है। सब प्रभु की लीला कि ऐसा जीव गढा।

संपूर्ण दुनिया परेशान हैरान है कि भगवन ने ऐसी आत्मा क्यों रची। आपकी, हमारी, दुनिया की क्या बिसात, खुद रामजी परेशान है कि कल ये क्या करेगा। सोचते हैं कि ये क्या रच दिया, उन्हें खुद समझ नहीं आता है कि ऐसा कैसे हो गया मेरा नया प्रयोग। समझ आये भी तो कैसे, जटिल नशे के सुरूर में बो दिया बीज बबूल का और अब ढूंढ रहे हैं आम। खैर जैसी भी है, आत्मा एक पर मिनी स्वरूप अनेक...!

▶ **छत्र छाजेड़ ‘फक्कड़ ‘
बी- 76 आनंद विहार
दिल्ली - 110092
मो.- 9350051179**